पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय :

=======================================

पंजाब का संस्कृत-काव्य को योगदान ।

===========================

एक विवरणात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन

(1966 से 1990 ई. तक की अवधि में प्रकाशित

संस्कृत-काव्यों के आधार पर)

महेशचन्द्र शर्मा

डॉ. बहादुरचन्द छाबड़ा :

जीवन परिचय तथा कर्तृत्व : एक मूल्यांकन

आधुनिक काल के विशेष कर पंजाब के संस्कृत - काव्य प्रणेताओं में डॉ. बहादुरचन्द छाबड़ा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म तीन अप्रैल 1908 को कोहाट, तात्कालिक पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। श्रीमती वीर देवी एवं श्री बिशनदास (विष्णुदास) को इनके माता - पिता होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में इन्होंने अपनी रचनाओं में संकेत दिया है :

वीरदेव्यां समुत्पन्नो विष्णुदासस्य नन्दन: ।
चापोत्कटकुलोत्तंस: कविरस्या बहादुर: ॥[1]

श्रीमती सुशीला छाबड़ा इनकी जीवन संगिनी बनी। इनकी शिक्षा वर्तमान पाकिस्तान में हुई। इन्होंने सनातन धर्म कॉलेज, लाहौर से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए. एम. ओ. एल. की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने नीदरलैण्ड (हॉलैण्ड) की स्टेट यूनिवर्सिटी, लाइडन से "एक्स्टैंशन ऑफ इण्डो आर्यान कल्चर" विषय पर डा. आई. फिलिप वोगल के निर्देशन में शोध कार्य करके पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।[2] अन्त:साक्ष्य के आधार पर विदित होता है कि इन्होंने श्री वोगल, जो नीदरलैंड (हॉलैण्ड) के निवासी थे, के प्रति अपने श्लोक सुमनों से ग्रथित रचना "न्यक्तर जनपद शोभा" समर्पित की है जो इनकी गुरु के प्रति श्रद्धातिशय की परिचायिका है।[3]

डॉ. छाबड़ा ने भारत सरकार के पुरातत्व विभाग में सेवा कार्य किया। अपने व्यवसाय में विशेष योग्यता प्रदर्शन करते हुए वे उक्त विभाग के डायरैक्टर पद तक पहुंच कर सेवा निवृत्त हुए। आजकल विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका "विश्वसंस्कृतम्" के सम्पादक मण्डल के सदस्य हैं।

डॉ. छाबड़ा अनूठी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्तित्व के स्वामी हैं। इनके व्यक्तित्व का प्रभाव एवं कवित्व प्रतिभा का चमत्कार इनके विद्यार्थी जीवन से ही प्रकाश में आने लगा था। जब ये सनातन धर्म कॉलेज, लाहौर में बी. ए. में पढ़ रहे थे, 13 अप्रैल 1929 को कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री रघुवर दयाल का निधन हो गया।

उस समय कॉलेज की मासिक पत्रिका के मई 1929 ई. के अंक में "श्री रघुवर दयालु गुण कीर्तनम्" शीर्षक के अन्तर्गत इनकी पच्चीस श्लोकों की रचना प्रकाशित हुई।[4] उस समय इनकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। इतनी कम आयु में शुद्ध संस्कृत में छन्दोबद्ध रचना करना वस्तुत: इनकी प्रतिभा सम्पन्नता को सिद्ध करता है।

1937-38 में कुप्पुस्वामी रिसर्च इन्स्टीच्यूट, मद्रास ने रामनवमी के अवसर पर प्रतियोगिता के लिए "सुमित्रा" पर अधिक से अधिक 15 श्लोकों की मूल संस्कृत - काव्य रचनाएं आमन्त्रित की। इस सन्दर्भ में मद्रास के "दी हिन्दू" में विज्ञापन प्रकाशित हुआ। उस समय डॉ. छाबड़ा आर्क्यौलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के कार्यालय में शिलालेख विद्या के सहायक अधीक्षक के रूप में ऊटाकमण्ड में कार्यरत थे। इन्होंने अपनी काव्य रचना "सुमित्रापंचदशी" प्रतियोगिता में भेजी। इस प्रतियोगिता में अनेक कवियों ने भाग लिया था। इनकी रचना को सर्वश्रेष्ठ रचना का पुरस्कार प्राप्त हुआ और इन्हें वाल्मीकि रामायण पारितोषिक के रूप में प्राप्त हुई।[5] यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इनकी अनेक काव्य - रचनाएं होशियारपुर की त्रैमासिक पत्रिका "विश्वसंस्कृतम्" में समय - समय पर प्रकाशित होती रही हैं।

डॉ. छाबड़ा की समस्त काव्य रचनाओं का संकलन विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध - संस्थान, होशियारपुर से "पुष्पहास:" नाम से ईस्वी सन् 1985 में प्रकाशित हुआ है। डॉ. छाबडा का काव्य संसार वैविध्यपूर्ण है। इसमें देववन्दना, महापुरुषों की प्रशस्ति, अभिनन्दन श्लोक एवं लघुकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। "पुष्पहास:" में संकलित रचनाओं का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है : 1- काव्य रूपों के आधार पर, 2- विषय के आधार पर। काव्य रूपों के आधार पर इन रचनाओं को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं :

1- लघुकाव्य

2- प्रकीर्ण काव्य

उनकी निम्नलिखित रचनाओं को लघु काव्य की श्रेणी में रखा जा सकता है :

1- न्यक्तर जनपद शोभा, श्लोक संख्या 55 से 100

2- ईशोपलम्भ:, श्लोक संख्या 141 से 247

3- सिन्धु शतकम् , श्लोक संख्या 259 से 375

4- श्री सूर्यस्तव:, श्लोक संख्या 504 से 598

5- श्रृंगार भृंगारिका, श्लोक संख्या 614 से 843

इन लघु काव्यों के अतिरिक्त "पुष्पहास:" में संकलित सभी काव्य- कृतियों को प्रकीर्ण काव्यों की श्रेणी में लिया जा सकता है।

विषय के आधार पर "पुष्पहास:" में संकलित रचनाओं का वर्गीकरण विचारणीय है। यदि पूर्वापर सम्बन्ध से रहित प्रत्येक श्लोक को मुक्तक मान कर वर्गीकरण करें तो संकलित अधिकांश रचनाएं मुक्तक ही है। फिर भी, पूर्वापर सम्बन्ध से रहित होने पर भी अलग अलग शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित मुक्तक रचनाओं का विषय के आधार पर वर्गीकरण करना अधिक समीचीन होगा। अत: विषय के आधार पर "पुष्पहास:" में संकलित सभी रचनाओं का निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है।

1- <u>देव-स्तुति-परक रचनाएं</u> - इन रचनाओं में भगवान शिव, विष्णु, सरस्वती पार्वती एवं सूर्य की स्तुतियें ली जा सकती हैं।[6]

2- <u>देववाणी स्तुति-परक रचनाएं</u> - इन रचनाओं में देववाणी संस्कृत की स्तुति है। कवि ने संस्कृत भाषा के प्रति अपना विशेष अनुराग प्रदर्शित किया है।[7]

3- <u>पौराणिक पात्रों एवं धार्मिक महापुरुषों की स्तुतिपरक रचनाएं</u> ।

इन रचनाओं में सुमित्रा और प्रद्युम्न इन पौराणिक पात्रों एवं महात्मा बुद्ध, महावीर, दयानन्द एवं पार्श्वनाथ की स्तुति है।[8]

4- <u>विशिष्ट व्यक्तियों की स्तुतिपरक रचनाएं</u> - इन रचनाओं में महाकवि कालिदास, महात्मा गांधी आदि राष्ट्रीय नेता एवं कवि के संपर्क में आने वाले विद्वानों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की स्तुतियां हैं।[9]

5- <u>मित्रस्तुति परक रचना</u> - "मित्रार्चि:", पुष्पहास:, श्लोक संख्या 22 से 35 में मित्र के महत्व का बहुत सुन्दर ढंग से स्तुतिपरक वर्णन है।

6- <u>स्थान विशेष की महिमा परक रचनाएं</u> - तीन वर्ष के अपने नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड। प्रवास की अवधि में डॉ. छाबड़ा ने वहां की प्राकृतिक सुषमा के जिस भव्य रूप को देखा "न्यक्तरजनपदशोभा" के 46 श्लोकों के लघु काव्य में उसी का मनोहारी वर्णन कवि ने किया है।[10] "मथुरा महिमा" को भी

इसी वर्ग में लिया जा सकता है।

7- <u>प्रात: चित्रण</u> - "प्रातरागमनम्" रचना में प्रात:काल का सुन्दर वर्णन है।

8- <u>व्यङ्ग्य काव्य</u> - "ईशोपलम्भ:" लघुकाव्य एवं एक श्लोकी रचना "पशुपति:" भगवान शंकर के विभूतिमत्व पर किये गये कटाक्ष हैं।

9- <u>फैंटेसी (स्वैर कल्पना प्रधान) काव्य</u> - "सिन्धुशतकम्" एक सुन्दर लघु काव्य है। श्री बी. बी. लाल ने "सिन्धुशतकम्" शीर्षक से ही अंग्रेजी में काव्य रचना की थी। डॉ. छाबड़ा का यह लघु काव्य उक्त अंग्रेजी कविता पर ही आधारित है।[11]

10- <u>प्रेरणाप्रद रचनाएं</u> - "पुष्पहास:" में इक्कीस[12] ऐसी रचनाएँ हैं जो पाठकों के लिए प्रेरणाप्रद हैं। वस्तुत: इस वर्ग की रचनाएँ इस काव्यसंकलनका सब से महत्वपूर्ण भाग है।

11- <u>वैराग्यमूलक रचनाएं</u> - इस वर्ग में वे रचनाएँ आती हैं जो बीते हुए समय की बीती हुई घटनाओं पर कवि के पश्चात्ताप से सम्बन्धित हैं एवं संसार की असारता को जानकर अनासक्ति के कारण कवि के हृदय में उत्पन्न वैराग्य भाव से सम्बन्धित हैं।[13]

12- <u>शृंगार प्रधान रचनाएं</u> - दो सौ तीस पद्यों के लघु काव्य "शृंगार भृंगारिका" सहित तीन अन्य छोटी छोटी कृतियों में शृंगार का सुन्दर चित्रण हुआ है।[14]

13- <u>प्रकीर्ण रचनाएं</u> - "प्रकीर्णानि" शीर्षक के अन्तर्गत 107 श्लोकों को संकलित किया गया है जो कि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित हैं।

14- <u>अभिनन्दन परक रचनाएं</u> - ये रचनाएं विवाह, जन्म दिन, नव वर्ष बधाई अथवा किसी को सम्मान आदि के अवसरों पर रचे गए मुक्तकों का संकलन है।

15- <u>अनूदित रचनाएं</u> - ये रचनाएं अन्य भाषाओं की रचनाओं के संस्कृत पद्य में सुन्दर अनुवाद हैं।

रस काव्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष होता है। आचार्य विश्वनाथ ने रसात्मक वाक्य को काव्य कह कर रस को काव्य का आत्म-तत्व माना है। रस की दृष्टि से "पुष्पहास:" में संकलित रचनाएं अपना विशेष स्थान रखती है। इनमें शृंगार रस, शान्त रस एवं भक्ति रस का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। शृंगार के दो भेद होते हैं - संयोग शृंगार और वियोग शृंगार। "पुष्पहास:" में संकलित रचनाओं में मुख्य रूप से शृंगार के संयोग पक्ष का ही चित्रण हुआ है। संयोग शृंगार के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं -

मन्ये सा वरवर्णिनी समभवत् सद्य: प्रसक्ता मयि
श्लिष्यन्तीव यथा स्थिता मम पुर: संभाषमाणा मया ।
स्फारोदारपयोधरोपरि लसत्पाणिव्रतानच्छलाद्
एतन्मे हृदयं तवार्पितमिति प्रीता प्रतीताब्रवीत् ॥ [15]

यहां पर वरवर्णिनी नायिका आलम्बन विभाव है, बातें करते हुए नायिका का इस प्रकार नायक के समीप आकर खड़े हो जाना मानो आलिंगन ही कर रही हो, उद्दीपन विभाव है, वार्तालाप क्रम में नायिका का स्फारोदार पयोधरों पर हाथ रखना अनुभाव है तथा हर्ष व्यभिचारिभाव है। इस प्रकार नायिका को आलम्बन बनाकर उस के अत्यन्त समीप आकर खड़े होने से उद्दीप्त हुआ रति स्थायिभाव अनुभाव और संचारिभावों के संयोग से शृंगार रस में परिणत हुआ।

डॉ. छाबड़ा का शृंगार चित्रण सामान्य युवक युवतियों की कोमल भावनाओं का चित्रण है। उक्त पद्य में वरवर्णिनी का वार्तालाप के समय समीप आकर खड़े होना और किसी कारण से या अकारण ही अपने स्फारोदार पयोधरों पर हाथ रखना इतना स्वाभाविक है कि पाठक का अनायास ही नायक या नायिका से तादात्म्य हो जाता है। शृंगार का यह रूप निश्चय ही हृदयग्राही है।

"सिन्धुशतकम्" एक स्वैरकल्पना-प्रधान काव्य है। इसमें शृंगार का अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप हमारे सामने आता है। कवि की सहचरी के आगमन के साथ ही शृंगार के लिये उपयुक्त वातावरण बन जाता है, अत: उक्त सहचरी इस काव्य में आलम्बन विभाव है। उसकी सुन्दर चेष्टाएं एवं यात्रा के समय प्राप्त सान्निध्य उद्दीपन विभाव है। कवि का सहचरी के साथ जाना, सहचरी का सखियों के साथ स्नान आदि क्रियाएं, सहचरी का कवि को स्नान के लिए आमन्त्रण आदि क्रियाएं अनुभाव हैं एवं कवि की उत्सुकता, आश्चर्य, हर्ष आदि संचारिभाव हैं। इस प्रकार "सिन्धु शतकम्" काव्य का

मुख्य रस शृंगार है। उक्त काव्य के अन्त में संयोग शृंगार रस का सुन्दर रूप देखा जा सकता है -

तेषामेव प्रथितयशसामासवानां प्रभावाद्
आसं सोऽहं क्वचिदपि पुनर्दिव्यथामेव नीत: ।
तामासीनां मम सहचरीं पीतमत्तां मदंके
वक्ष:पीडं मधुरमधरं पाययन्तीमरक्षम् ॥[16]

यहां पर नायिका आलम्बन विभाव है, आसवों का प्रभाव उद्दीपन विभाव है, सहचरी को गोद में बैठाकर उसका वक्ष दबाना और अधरपान अनुभाव हैं, नायक की अलौकिक संसार में पहुंच जाने की कल्पना और नायिका का हर्षित हो जाना व्यभिचारी भाव हैं। इस प्रकार नायिका को आलम्बन बनाकर आसवों के प्रभाव से उद्दीप्त हुआ रति स्थायिभाव अनुभाव और संचारिभावों के संयोग से संयोग - शृंगार रस के रूप में परिणत हुआ।

यह शृंगार रस का हृदयस्पर्शी चित्रण है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कवि पाठकों का पात्रों के साथ तादात्म्य करवाने में पूरी तरह सफल हुआ है। यही रस चित्रण की सफलता का निकष है।

"मधुपानुताप:", "पद्मिनी प्रणय:" एवं "नैराश्यम्" रचनाओं में वियोग शृंगार के तत्व पाये जाते हैं। सिन्धुशतकम् के कतिपय श्लोकों में [17] करुण रस का भी आभास होता है।

इस प्रकार रस की दृष्टि से डॉ॰ छाबड़ा की रचनाओं में मुख्य रूप से शृंगार रस ही पाया गया है। वैराग्य प्रधान रचनाओं में शान्त रस एवं देवस्तुति परक रचनाओं में भक्ति रस की अभिव्यक्ति हुई है।

डॉ॰ छाबड़ा बाह्य प्रकृति केसूक्ष्म द्रष्टा हैं। अपने तीन वर्ष के नीदरलैण्ड ।हॉलैण्ड। प्रवास की अवधि में उन्होंने वहां पर प्रकृति केजिन रम्य रूपों को देखा "न्यक्तर जनपद शोभा" में उन का भव्य एवं सूक्ष्म चित्रण किया गया है।[18] नीदरलैंड में विभिन्न ऋतुओं में प्रकृति के बदलते बिखरते रूपों को चित्रित कर डॉ॰ छाबड़ा ने प्रकृति चित्रण में अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया है। वसन्त, वर्षा एवं हेमन्त ऋतुओं में प्रकृति के विभिन्न रूप कवि का वर्ण्य विषय रहे हैं। हेमन्त ऋतु में हिमपात के कारण पर्वतीय प्रदेशों की शोभा अनिर्वचनीय सुषमा विभूषित होती है। हिम वृष्टि का चित्र अंकित करते हुए कवि ने लिखा है -

श्वेतश्वेततुषारपातमिषतः कर्पूरपिष्टातकं
सद्यश्चूर्णितमूर्मिभंगतरलं मुष्ट्या समस्यन्मुहुः ।
निश्चेष्टामनुकूलतामिव गतां व्रीडावलीढाननाम्
आकाशः पृथिवीं प्रियां प्रियतमां क्रीडारसेनार्दति ।।[19]

यहां पृथिवी की प्रेमिका के रूप में एवं आकाश की प्रेमी के रूप में कल्पना अत्यन्त भव्य बन पड़ी है। आकाश से गिरती बर्फ की कर्पूरपिष्टातक के रूप में कल्पना, और यह कहना कि आकाशरूपी प्रेमी अपनी प्रेमिका पृथिवी को कपूर के चूर्ण की मुट्ठियें फेंक कर छेड़ रहा है, एक बहुत ही हृदयावर्जक प्रयोग है। पृथिवी की निश्चेष्टता की किसी प्रेमिका के अनुकूल होकर लज्जानम्र मुखी हो जाने से उपमा देना अत्यन्त मर्म-स्पर्शी है। प्रकृति चित्रण की यह भंगिमा पाठक के हृदय में कुछ ऐसा तादात्म्य पैदा करती है कि उसे प्रकृति-मय बना देती है।

अलंकार कविता कामिनी के शोभाधायक धर्म हैं। इनके प्रयोग से काव्य में चमत्कार एवं वैदग्ध्य स्पंदित हो उठता है। मुख्य रूप से शब्द और अर्थ को आधार बना कर अलंकारों के दो भेद किये गये हैं। शब्दालंकारों के प्रयोग से काव्य की भाषा में सौन्दर्य, नाद-माधुर्य श्रुति सुखदता आदि गुणों का समावेश हो जाता है। डॉ. बहादुर चन्द छाबड़ा ने अनुप्रास, यमक तथा शब्दश्लेष का विशेष रूप से प्रयोग किया है। इनकी काव्य रचनाओं में शब्दालंकारों के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। उन में से कतिपय निम्नलिखित हैं -

स्वर वैषम्य होने पर भी व्यंजनों के साम्य को अनुप्रास कहते हैं। छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, अन्त्यानुप्रास तथा लाटानुप्रास नाम से अनुप्रास के पांचभेद होते हैं।

एक या अनेक वर्णों के एक वार अथवा अनेक वार केवल स्वरूप से अथवा स्वरूप और क्रम दोनों प्रकार से साम्य को वृत्यनुप्रास कहते हैं।[20] "पुष्पहासः" में से वृत्यनुप्रास का एक उदाहरण प्रस्तुत है -

आलस्यं विनिहत्य निश्चितमनाः पूर्णेन यत्नेन यत्
कार्यं कर्म करोषि साधु समये साध्यस्य संसिद्धये ।
तद् वै द्वारमपावृतं तव भवेत् सिद्धेः समृद्धेस्तथा
नेयं कल्पलता न सो मरतरुर्न स्वर्धुनी चाप्यसौ ।।[21]

प्रस्तुत पद्य में द्वितीय पाद में "क, र" अर्थात् अनेक वर्णों का अनेक वार ।तीन वार। अनेकधा अर्थात् स्वरूप से भी और क्रम से भी साम्य है एवं "स, ध" का, अनेक वर्णों का एकधा अर्थात् केवल स्वरूप से सकृत् साम्य है अर्थात् दो वार प्रयोग है। इस के अतिरिक्त प्रथम पाद में "य" की चार बार एवं "न" की छ: वार आवृत्ति हुई है। द्वितीय पाद में "स" की पांच वार आवृत्ति हुई है। तृतीय पाद में "ट" का सकृत् साम्य है, "व" और "त" की तीन तीन बार एवं "त"की पांच बार आवृत्ति हुई है। चतुर्थ पाद में "ल" और "त" का सकृत् साम्य है, "स" की तीन बार, एवं "न" और "र" की चार चार बार आवृत्ति हुई है। इस प्रकार इस पद्य में अनेकस्य असकृत् अनेकधा साम्य, अनेकस्य सकृत् एकधा साम्य, एकस्य सकृत् एकधा एवं एकस्य असकृत् एकधा साम्य के उदाहरण मिलते हैं। अत: यह वृत्यनुप्रास का बहुत सुन्दर उदाहरण है।

उक्त श्लोक में अनुप्रास के प्रयोग ने काव्य में सौन्दर्य को बढ़ाया है, नाद-माधुर्य और श्रुति-सुखदता आदि गुणों का समावेश किया है। किन्तु ऐसा कहीं नहीं लगता कि डॉ. छाबड़ा ने आयासपूर्वक अलंकार का आयोजन किया हो। इनका अलंकार प्रयोग स्वाभाविक है। अलंकार के भार से इनकी कविता दबती नहीं है।

डॉ. छाबड़ा ने यमक अलंकार का भी बहुत सुन्दर एवं बहुत ही स्वाभाविक प्रयोग किया है। यदि सार्थक हो तो पृथक् अर्थ वाले स्वर व्यंजनों के समूह की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक अलंकार कहते हैं।[22] यमक अलंकार का उदाहरण निम्नलिखित है -

अनड्वानेकसम्पत्तिर्नास्य वेश्म न वेष्टनम् ।
केनाभिगामिकेनासीत् तवासक्ति: शिवे शिवे ।।[23]

यहां पर "केनाभिगामिकेनासीत्" में "केन" की आवृत्ति हुई है। इसमें प्रथम "केन" सार्थक है और दूसरी बार आने वाला केन निरर्थक है, किन्तु आवृत्ति उसी क्रम में हुई है। अथव प्रथम "शिवे" शिव का सप्तमी एकवचन रूप है और दूसरा "शिवे" शिवा का सम्बोधन रूप है। इस प्रकार पृथक् अर्थों वाली स्वर व्यंजन संहति की उसी क्रम में आवृत्ति हुई है। अत: इस श्लोक में यमक अलंकार है।

यमक अलंकार के इस प्रयोग में भी यह बात विशेष रूप से द्रष्टव्य है कि अलंकार का प्रयोग अनायास सिद्ध है। अतएव पाठक के हृदय को स्पर्श करता है। "पुष्पहास:" में शब्दश्लेष के भी बहुत सुन्दर प्रयोग पाये जाते हैं।[24]

शब्दालंकारों की तरह अर्थालंकारों के प्रयोग में भी डॉ. छाबड़ा सिद्धहस्त हैं। उन्होंने उपमा[25], उत्प्रेक्षा[26], रूपक[27], स्वभावोक्ति[28], विरोधाभास[29], अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का बहुत ही हृदयावर्जक प्रयोग किया है। अर्थान्तरन्यास का उदाहरण निम्नलिखित है -

उक्त अर्थ का किसी अन्य अर्थ से समर्थन अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। साधर्म्य से अथवा वैधर्म्य से यदि विशेष से सामान्य का या सामान्य से विशेष का, कारण से कार्य का अथवा कार्य से कारण का समर्थन किया जाये वहां अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।[30]

यद्दूरात् सुतरां विभातिरुचिरं चेतोहरं भास्वरं
प्रत्यासीदति तद् यदा न हि तदा प्रायस्तथा भाति तत् ।
यच्चाद्यास्तिमनोहरं कुसुमितं श्वस्तत्परिम्लायते
किं नाम स्थिरमस्ति वस्तु जगति प्रत्येक मस्त्यस्थिरम् ।।[31]

यहां पर दूर से भास्वर प्रतीत होने वाला पदार्थ समीप आने पर प्राय: वैसा नहीं होता तथा जो आज मनोहर है उसे कल को म्लान हो जाना है। इन दो विशेष अर्थों का चतुर्थ पाद में प्रत्येक वस्तु की अस्थिरता रूप सामान्य अर्थ से समर्थन किया गया है। अत: यहां अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

यहां पर अर्थान्तरन्यास अलंकार के प्रयोग ने पूर्व तीन पादों में कहे गये दो विशेष अर्थों को इतना प्रभावशाली और मर्म-स्पर्शी बना दिया है कि पाठक के हृदय में श्लोक पढ़ने के बाद वस्तुत: संसार की असारता का अनुभव होने के साथ - साथ एक प्रकार की विरक्ति सी उत्पन्न हो जाती है।

डॉ. छाबड़ा ने अलंकारों का प्रयोग करते समय अनेक उपमानों को वातावरण से ही चुना है। उनके उपमान किसी दूसरे काल्पनिक विश्व के नहीं हैं अपितु पाठक के जाने पहचाने होते हैं। इससे उनका अलंकार प्रयोग अधिक प्रभावोत्पादक बन गया है।

डॉ. छाबड़ा ने अपनी काव्य कृतियों में अनुष्टुप्[32], वंशस्थ[33], भुजंग प्रयात[34], द्रुतविलंबित[35], आर्या[36], शालिनी[37], वसन्ततिलका[38], शिखरिणी[39], स्रग्धरा[40], मन्दाक्रान्ता[41], शार्दूलविक्रीड़ित[42] आदि छन्दों का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया है। विविध छन्दों में काव्य रचना करने की समान क्षमता इनकी प्रतिभा की विशेषता रही है। इन्होंने शार्दूलविक्रीड़ित छन्द का प्रयोग सबसे अधिक किया है। इस छन्द का प्रयोग

उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाओं में किया है। कहीं कम, कहीं अधिक। शृंगार-परक रचनाओं में, प्रेरणाप्रद रचनाओं में, वैराग्यपरक रचनाओं में और प्रकीर्ण रचनाओं में इस छन्द का प्रयोग अधिक हुआ है। मन्दाक्रान्ता छन्द का भी पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हुआ है। प्रथम श्लोक को छोड़कर "सिन्धुशतकम्" के सभी एक सौ सोलह पद्य मन्दाक्रान्ता छन्द में हैं। "सूर्यस्तव:" एवं अन्य स्तुतिपरक तथा अन्य रचनाओं में भी अनुष्टुप् और आर्या छन्द का भी प्रयोग हुआ है। "गान्धिपादाभिवन्दनम्" में डॉ. छाबड़ा ने गायत्री छन्द का प्रयोग किया है। इस छन्द का प्रयोग वेदों में ही पाया जाता है। लौकिक संस्कृत में यह एक स्तुत्य प्रयास है। "पुष्पहास:" का निम्न पद्य छन्द की दृष्टि से दर्शनीय है -

कैकेयीं प्रति मत्सरं न भेजे कौसल्यां प्रति नातिपक्षपातम् ।
दृष्टादृष्टमविन्वती सपत्न्यो: सौमित्रं समदर्शयत् सुमित्रा ॥ [43]

इस पद्य में सर्वथा नवीन छन्द का प्रयोग हुआ है। इसका लक्षण किसी छन्दशास्त्र में नहीं है। डॉक्टर छाबड़ा ने पद्य रचना करते हुए अनायास ही इस नये छन्द की सृष्टि कर डाली। [44]

डॉ. छाबड़ा का संस्कृत भाषा पर विशेष अधिकार है। वे अपनी रचनाओं में व्याकरणानुमोदित भाषा का प्रयोग करते हैं। उनका शब्द भण्डार अपार है। "श्री सूर्यस्तव:" के प्रत्येक पद्य में सूर्य की नवीन नाम से स्तुति की गई है। कहीं भी सूर्य के नामों में पुनरावृत्ति नहीं हुई है। वह कवि के शब्द सामर्थ्य को सूचित करता है। शरव्य ।762।, रोचिष्णु ।778।, पश्यतोहर ।793।, कर्णेहत्य ।836।, श्वश्रे त्र932।, गृध्नुता ।177।, हृदोपपीडम् ।88। आदि प्रयोग उनके व्याकरण पाण्डित्य को प्रदर्शित करते हैं। इनकी रचनाओं में माधुर्य एवं प्रसाद गुणों की अल्प मात्रा होने से क्लिष्टता अवश्य खटकती है। प्रक्षेप्स्यामि ।52।। तथा विप्रकृष्टम् ।530। जैसे शब्द श्रुतिसुखद नहीं हैं। कहीं - कहीं संधि के कारण पदों में क्लिष्टता आ गई है, जैसे "तमोरे" ।52।। कदेमे ।57।। आदि। "श्री सूर्यस्तव:" में तथा अन्यत्र भी अप्रयुक्त शब्दों का प्रयोग किया है।

डॉ. छाबड़ा ने अपने काव्य में अनेक जीवन सत्यों को सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनके काव्य में ऐसी सूक्तियां हैं जो चित्त को आल्हादित कर जीवन में प्रेरणा का स्रोत बहा देती हैं। इनकी कतिपय हृदयावर्जक सूक्तियां निम्नलिखित हैं -

1- नह्येकान्तं सुखमयमहोजीवनं जीव लोके । [45]

2- सर्वे सर्वं शक्तिमन्तं न सन्ति । [46]

3- मृत्पिण्डो हि भवति कनकं वह्निना पूयमानः । [47]

4- संतोषामृतपान तृप्तमनसां पुंसां न कापि स्पृहा। [48]

5- किं नाम स्थिरमस्ति वस्तु जगति प्रत्येकम स्त्यस्थिरम् । [49]

डॉ. छाबड़ाके काव्यों में कतिपय स्थलों पर प्राचीन संस्कृत कवियों की छाया भी परिलक्षित होती है। तुलना के लिए निम्न उदाहरण प्रस्तुत है -

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया:
वियोगे को भेदस्त्यजति न जानो यत्स्वयममून् ।
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यात्परम परितापाय मनसः ।
स्वयं त्यक्ता ह्येते शम सुखमनन्तं विदधतः ॥

यह पद्य भर्तृहरि के वैराग्य शतक का है। इसी भाव को लेकर डॉ. छाबड़ा ने निम्न श्लोक की रचना की है -

एकस्मिन् दिवसे त्यजेयुरखिलास्त्वामिन्द्रियार्था ध्रुवं
स त्वं दुःखमवाप्स्यसि ध्रुवतरं तैस्त्यज्यमानस्तदा ।
तस्मात्येव पुनस्त्वमेव यदि तान् जह्याः स्वयं स्वेच्छया
तर्ह्यानन्दमवाप्स्यसि त्वमतुलं शुद्धं स्थिरं शाश्वतम् ॥ [50]

इसी प्रकार प्राचीन कवियों की छाया डा. छाबड़ा के काव्य में कतिपय अन्य स्थानों पर भी देखी जा सकती है। डॉ. छाबड़ा ने प्राचीन कवियों के शब्दों, वाक्यों और भावों को ग्रहण अवश्य किया है किन्तु इनके प्रयोग इतने निजी हैं कि इन सब पर इनकी अपनी मुद्रा अंकित हो गई है।

डॉ. छाबड़ा का काव्य संकलन "पुष्पहासः" उनकी विविध काव्य - कृतियों का एक पुस्तक में संकलन है। यह भक्ति, शृंगार, वैराग्य और अन्य उपदेश परक सूक्तियों से मण्डित है। अब तक संस्कृत भाषा में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का ही चित्रण होता रहा है किन्तु डॉ. छाबड़ा ने "न्यक्तर जन पद शोभा में" ग्रीष्म ऋतु में बिकनी पहने युवतियों की युवकों के साथ तरणताल केलियों और उनके सूर्यस्नान आदि का वर्णन करके संस्कृत काव्य में पश्चिमी सभ्यता को स्थान देकर संस्कृत काव्य के वर्ण्य विषय को समृद्ध किया है। डॉ. छाबड़ा द्वारा रचित "ईशोपलम्भः" एक ऐसा लघु काव्य है

जिसमें वैदग्ध्यपूर्ण भंगिमा में भगवान शंकर के विभूतिमत्व पर कटाक्ष किये गये हैं। यह एक सर्वथा नया प्रयोग है। शृंगार प्रधान रचनाओं में कवि का चिन्तन मौलिक होने के साथ साथ मानव हृदय की सूक्ष्म किन्तु क्षणिक संवेदनाओं से जुड़ा रहा है। कवि ने युवतियों के सम्पर्क में आने पर आधुनिक युवाओं के हृदय में उठने वाले क्षणिक भावों को ही काव्य का विषय बनाया है। यद्यपि पहले पर्याप्त मात्रा में शृंगार काव्य रचे गये हैं किन्तु डॉ. छाबड़ा की शृंगार कल्पना सर्वथा नवीन है। यह कहना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि इनकी शृंगार कल्पनाओं में काम की भंगिमाएं तो हैं किन्तु कहीं गम्भीर प्रेम की अनुभूति नहीं होती। अन्ततोगत्वा कामकरिकुम्भ वैराग्य के अंकुश से निगडित हो जाता है और कवि संसार की असारता को अनुभव कर आत्म कल्याण की ओर प्रवृत्त होता है।

13

सन्दर्भिका

1- पुष्पहासः, श्लोक संख्या 98

2- पुष्पहासः, Explanatory Notes, page 176

3- पुष्पहासः, श्लोक संख्या 56

4- पुष्पहासः, Explanatory Notes, page 190

5- पुष्पहासः, Explanatory Notes, page 174

6- पुष्पहासः, वन्दना, श्लोक संख्या 1 से 5
वाणी प्रणामांजलिः, श्लोक संख्या 6
पुष्पहासः, श्लोक संख्या 101
समर्पणम्, श्लोक संख्या 248
श्री सूर्यस्तवः, श्लोक संख्या 504 से 598
हनुमत्प्रशस्तिः, श्लोक संख्या 860 से 866

7- पुष्पहासः, देववाणीगौरवम् , श्लोक संख्या 403 और 404
संस्कृतवागेव मेशरणम् , श्लोक संख्या 475 से 479

8- पुष्पहासः, सुमित्रापंचदशी, श्लोक संख्या 7 से 21
बुद्धप्रणामांजलिः, श्लोक संख्या 51
बुद्धप्रणामांजलिः, श्लोक संख्या 903
प्रद्युम्नो मित विक्रमः, श्लोक संख्या 125 से 128
दयानन्दाभिनन्दनम् , श्लोक संख्या 384 से 391
पार्श्वनाथवन्दना, श्लोक संख्या 904

9- पुष्पहासः, कालिदास प्रतिभा, श्लोक संख्या 405 से 413
गांधिमादाभिनन्दनम् , श्लोक संख्या 102 से 110
लाला लाजपतराय प्रशस्तिः श्लोक संख्या 414 से 425
संजयस्मरणम् , श्लोक संख्या 1132 से 1138
श्री वासुदेव प्रशस्तिः, श्लोक संख्या 392 से 397
श्री रघुवरदयालुगुणकीर्तनम् , श्लोक संख्या 449 से 473
श्री कुप्पुस्वामिकीर्तिः, श्लोक संख्या 502 और 503
मातुः स्मरणम् , श्लोक संख्या 910 से 912

10- पुष्पहासः, श्लोक संख्या 57

11- पुष्पहास:, Explanatory Notes, page 183

12- पुष्पहास:, पौरुष पंचदशी, श्लोक संख्या 36 से 50
पिपीलिका पौरुषम् , श्लोक संख्या 129 से 140
चित्त चेतनम् , श्लोक संख्या 376 से 378
आत्मजय:, श्लोक संख्या 398 से 402
आत्मप्रबोधाष्टकम् , श्लोक संख्या 426 से 433
देहीतिदीनं वच:, श्लोक संख्या 440 से 448
पुण्यार्जनम् , श्लोक संख्या 474
सन्तोषामृतम् , श्लोक संख्या 480 और 481
सर्वेऽपितेशंकरा:, श्लोक संख्या 482 से 485
त्रयंत्यजेत् , श्लोक संख्या 486
उत्साह:, श्लोक संख्या 908 और 909
प्रात:पंचकम् , श्लोक संख्या 599 से 603
उत्साह:, श्लोक संख्या 498 से 501
आत्मोद्धार:, श्लोक संख्या 604 से 606
आत्मोद्धार:, श्लोक संख्या 867 से 890
आलस्यम् , श्लोकसंख्या 607
अनिर्वेद:श्रियोमूलम् , श्लोक संख्या 608
ब्रह्मचर्य प्रति, श्लोक संख्या ~~x229x3र्रxx922x~~ 897 से 902
धन्या:सुखेरते, श्लोक संख्या 1020 और 1021
आनन्दसम्बोधनम् , श्लोक संख्या 379 से 383
शुक्लमाहात्म्यम् , श्लोक संख्या 609 से 613

13- पुष्पहास:, अनुशय:, श्लोक संख्या 250 से 258
वैराग्यविजृम्भणम् , श्लोक संख्या 487 से 489
वैराग्यविजृम्भणम् , श्लोक संख्या 891 से 896
पश्चात्ताप:, श्लोक संख्या 490 से 497
अत्यन्तकामोऽन्तक:, श्लोक संख्या 434 से 439

14- पुष्पहास:, शृंगार भृंगारिका, श्लोक संख्या 614 से 843
मधुमानुताप:, श्लोक संख्या 844 से 850

पद्मिनी प्रणय:, श्लोक संख्या 851 और 852

नैराश्यम् , श्लोक संख्या 853 से 859

15- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 820

16- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 372

17- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 271, 272 और 273

18- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 57

19- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 77

20- साहित्यदर्पण, 10/5

21- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 40

22- साहित्यदर्पण, 10/10

23- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 149

24- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 146

25- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 662

26- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 262

27- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 265

28- पुष्पहास: श्लोक संख्या 647

29- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 249

30- साहित्यदर्पण, 10/80

31- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 982

32- पुष्पहास:, श्लोकसंख्या 1

33- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 9

34- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 15

35- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 66

36- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 53

37- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 25

38- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 807

39- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 16

40- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 14

41- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 260

42- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 22

43- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 12

44- पुष्पहास:, Explanatory Notes, page 175

45- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 273

46- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 142

47- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 277

48- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 966

49- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 982

50- पुष्पहास:, श्लोक संख्या 893

....